पाठ-7

जन आन्दोलनों का उदय

2/11/2022

PANKAJ
Page No.:
Date : / /

(1) जन आन्दोलनों की प्रकृति :—

⇒ सन् 1970 के दशक में विभिन्न सामाजिक वर्गों, जैसे - महिला, विद्यार्थी, दलित और किसानों को यह महसूस हुआ कि लोकतांत्रिक राजनीति उनकी आवश्यकताओं और माँगों पर ध्यान नहीं दे रही है। जिस कारण इस प्रकार के समूहों ने विभिन्न सामाजिक संगठनों के सहयोग से आन्दोलन प्रारम्भ कर दिए।

(i) चिपको आंदोलन :—

भारत के पर्यावरणीय आन्दोलनों में 'चिपको आन्दोलन' एक विश्व प्रसिद्ध आन्दोलन था। आन्दोलन की शुरुआत सन् 1973 उत्तराखण्ड के दो-तीन गाँवों से हुई थी। गाँव वालों ने वन विभाग से कहा कि खेतीबाड़ी के औजार बनाने के लिए हमें अंगू के पेड़ (Ash Tree) काटने की अनुमति दी जाए।

⇒ वन विभाग ने अनुमति देने से इंकार कर दिया तथा खेल सामग्री बनाने वाली एक कम्पनी को जमीन का यह टुकड़ा आंवटित कर दिया।

⇒ गाँव वालों ने सरकार के इस कदम का विरोध किया। गाँव वालों ने पेड़ों को अपनी बाँहों से घेर लिया ताकि उन्हें कटने से बचाया जा सके।

(ii) हल - आधारित आंदोलन :—

⇒ औपनिवेशिक दौर में सामाजिक - आर्थिक मुद्दों पर भी विचार मंथन चला जिससे अनेक स्वतंत्र सामाजिक आंदोलनों का जन्म हुआ, जैसे - जाति प्रथा विरोधी आन्दोलन, किसान सभा आन्दोलन और मजदूर संगठन के आंदोलन।

⇒ मुम्बई, कोलकता और कानपुर जैसे बड़े शहरों के औद्योगिक मजदूरों के बीच मजदूर संगठन बने। उान्ध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल और बिहार के कुछ भागों में किसान तथा खेतिहर मजदूरों ने मार्क्सवादी-लेनिनवादी कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ताओं के नेतृत्व में अपना विरोध जारी रखा।

(iii) राजनीतिक आंदोलनों में स्वतंत्र आंदोलन :—

⇒ राजनीतिक धरातल पर सक्रिय कई समूहों का विश्वास लोकतांत्रिक संस्थाओं तथा चुनावी राजनीति से उठ गया।

⇒ मध्यवर्ग के युवा कार्यकर्ताओं ने गाँवों के गरीब लोगों के बीच रचनात्मक कार्यक्रम तथा सेवा संगठन चलाए। इन संगठनों को 'स्वंयसेवी क्षेत्र के संगठन' कहा गया।

2.) दलित पैंथर्स :—

⇒ दलित हितों की दावेदारी के इसी क्रम में महाराष्ट्र में 1972 में दलित युवाओं का एक संगठन "दलित पैंथर्स" बना।
आरक्षण तथा सामाजिक न्याय का क्रियान्वयन इनकी प्रमुख माँग थी। भारतीय संविधान ने छुआछुत को समाप्त कर दिया। (अनु. 17)
आपातकाल के बाद के दौर में दलित पैंथर्स ने चुनावी समझौते किए। उसमें कई विभाजन भी हुए और यह संगठन राजनीतिक पतन का शिकार हुआ। बैकवर्ड एण्ड माइनॉरिटी एम्पलाईज फेडरेशन (बामसेफ) ने दलित पैंथर्स की अवनति से उत्पन्न रिक्त स्थान की पूर्ति की।

Page No.: PANKAJ
Date: / /

⇒ सरकार ने 1989 में एक व्यापक कानून बनाया। इस कानून के तहत दलित पर अत्याचार करने वाले के लिए कठोर दण्ड के प्रावधान किए गये।

(3.) भारतीय किसान यूनियन :—

⇒ जनवरी 1988 में उत्तर प्रदेश के एक शहर मेरठ में लगभग बीस हजार किसान जमा हुए। ये किसान सरकार द्वारा बिजली की दरों में की गयी वृद्धि का विरोध कर रहे थे।

⇒ किसानों का यह बड़ा अनुशासित धरना था और जिन दिनों वे धरने पर बैठे थे उन दिनों आस-पास के गाँवो में उन्हें निरन्तर राशन-पानी मिलता रहा।

⇒ महाराष्ट्र के शेतकारी संगठन के किसानों के आंदोलन को 'इण्डिया' की ताकतों (शहरी औद्योगिक क्षेत्र) के खिलाफ 'भारत' (ग्रामीण कृषि क्षेत्र) का संग्राम घोषित किया।

⇒ सरकार पर अपनी माँगो को मानने के लिए दबाव डालने के क्रम में भारतीय किसान यूनियन (बीकेयू) ने रैली धरना प्रदर्शन और जेल भरो अभियान का सहारा लिया।

⇒ सन् 1990 तक इस दल ने अपने आप को राजनीति से दूर रखा। इस संगठन ने राज्यों में मौजूद अन्य किसान संगठनो को साथ लेकर अपनी कुछ माँगे मनवाने में सफलता पाई।

(4.) नेशनल फिशवर्कर्स फोरम :—

⇒ सन् 1980 के दशक के मध्यवर्ती वर्षों में आर्थिक उदारीकरण की नीति की शुरुआत हुई तो बाध्य होकर मछुआरों के

स्थानीय संगठनों ने अपना एक राष्ट्रीय मंच बनाया। इसका नाम 'नेशनल फिश वर्कर्स फोरम' रखा गया।

⇒ इस संगठन ने सन् 1981 में केन्द्र सरकार के साथ अपनी पहली कानूनी लड़ाई लड़ी और उसे सफलता मिली।

(5.) ताड़ी-विरोधी आंदोलन :—

⇒ आन्ध्र प्रदेश की महिलाओं ने शराब के खिलाफ लड़ाई छेड़ रखी थी। इसे राज्य में 'ताड़ी-विरोधी आंदोलन' के रूप में जाना गया।

⇒ ताड़ी विरोधी आंदोलन का नारा था — "ताड़ी की बिक्री बन्द करो।" ताड़ी व्यवसाय को लेकर अपराध एवं राजनीति के बीच गहरा सम्बन्ध बन गया था।

⇒ वे घरेलू हिंसा के मुद्दे पर भी खुले तौर पर चर्चा करने लगी। इस तरह ताड़ी विरोधी आन्दोलन महिला आन्दोलन का हिस्सा बन गया।

⇒ संविधान के 73वें और 74वें संशोधन के अंतर्गत महिलाओं को स्थानीय राजनीतिक निकायों में आरक्षण दिया गया है।

⇒ कुछ गुट जिनमें महिला समूह भी शामिल हैं, प्रस्तुत विधेयक के अन्तर्गत दलित और पिछड़े वर्ग की महिलाओं के लिए अलग से आरक्षण की माँग कर रहे हैं।